

सीखने की तड़प K के कारनामे



हर सुबह क्या चीज तुम्हें जगाती है ?
क्या है तुम्हारा जुनून ?



सीखने की तड़प

K के कारनामे

प्रकाशन – टाइमलेस्स लाइफस्किल्स लिमिटेड, लंदन

कॉपीराइट © 2014 सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN 978-1-908102-09-6

शब्द : पूजा पांडे

चित्रकला : डोल्फ वैन एडन

हिन्दी अनुवाद : पूर्वा भारद्वाज

लेखिका की ओर से ...

सीखने की पहली चिंगारी, सही मायने में सीखने की चिंगारी आपके बिना जाने आपमें जल उठती है। यह आपमें ऐसी चाहत पैदा कर देती है जो किसी चीज़ को सही मायने में समझने की चाहत है। यह आपको कुछ सीखने के लिए ठेलती है, कुछ नया सीखने के लिए उकसाती है। वह भी किसी बाहरी वजह (परीक्षा में अच्छे अंक लाने, किसी को प्रभावित करने, किसी नामी गिरामी संस्थान में दाखिला लेने) के लिए नहीं, केवल अपने लिए ! सीखने की यह चाहत आपको बदल डालती है। फिर आप वह नहीं रह जाते हैं जो पहले थे। इसी चाहत की यह कहानी है जो हर पाठक के लिए नई है। जितने पढ़नेवाले हैं उतनी ही इसकी शक्लें हैं।

यदि आप पलट कर सोचें तो आपको लगेगा कि आपको प्रेरणा देनेवाले कई एक लोग हैं – ऐसे पिता जो कुदरत का मज़ा लेने के लिए आपको सैर पर ले गए, ऐसी माँ जो आपको किताबें पढ़कर सुनाया करती थी, ऐसे स्कूल टीचर जिन्होंने बीच बीच में आपको अपने मन से काम करने की छूट दी, एक ऐसी सर्वज्ञानी मौसी जिनके दिलचस्प यात्रा वृत्तांत सुनकर आप निहाल हो जाते थे। लेकिन आखिरकार उनकी भूमिका मददगारों की ही थी। ऐसे लोग जो आपकी सीखने की यात्रा का सूत्रपात करते हैं, आपमें प्रेरणा का संचार करते हैं।

सच्चे अर्थ में सीखने के सबसे महत्वपूर्ण क्षण वे हैं जब आप अपने भीतर की तड़प को, अपने अंदर की आग को पहचानते हैं और अपना रास्ता खुद खोजते हैं। आपके इस सफ़र में जो सिखानेवाले हैं (और आज की तारीख में इसमें टेक्नोलॉजी की सकारात्मक भूमिका है) वे आपके पथप्रदर्शक हैं, आपकी राह रौशन करते हैं। वह जो प्रेरणा है वह आपमें समाहित है या कहें कि वह आप ही हैं। इसी तरह सीखने से जो खुशी मिलेगी वह भी आपको ही मिलेगी।

इस किताब के ज़रिए हम अपने सीखने के सफ़र पर बात करेंगे। हम कैसे सीखने की चाहत को सहेज कर रखते हैं, उसे सँजोते हैं और कैसे उसकी लौ जगाए रखते हैं (क्योंकि जितनी जल्दी यह उठती है उतनी ही तेज़ी से लुप्त भी हो जाती है), इस पर बात करेंगे। यह भी जानेंगे कि हम कभी सिर्फ सीखने के लिए सीखते हैं, कभी मज़े के लिए सीखते हैं और कभी केवल अपने लिए सीखते हैं।

– पूजा पांडे

संस्थापक की ओर से ...

हमारी औपचारिक शिक्षा कैसी है ? अक्सर यह एक GPS की तरह काम करती है जो सीखनेवालों को एक बँधी-बँधाई दुनिया में कदम-कदम पर रास्ता बताती हुई चलती है. 19 वीं और 20 वीं सदी में GPS वाली शिक्षा ठीक ठाक काम कर गई. उसमें स्कूल-कॉलेज की डिग्री के रूप में आप किसी एक क्षेत्र में ज्ञान का भंडार जमा कर लेते थे या कहिए कि डिग्रियों का थाक लगा लेते थे. चूँकि उन दिनों अधिकतर क्षेत्र में ज्ञान हासिल करने की दर बहुत कम थी, इसलिए यह शिक्षा पद्धति पर्याप्त थी.

आज हालात बदल गए हैं. 21 वीं सदी में ज्ञान का जो विस्फोट हुआ है उससे हर क्षण शिक्षा का नक्शा बदल रहा है. जब इतनी तेज़ी से सबकुछ बदल रहा हो तब कोई GPS कारगर नहीं होता. सीखनेवालों को ध्रुव तारा की तरह का एक कंपास (compass) चाहिए. एक अंदरूनी कंपास जो सीखनेवाले को स्वतन्त्र और गहरा सोचने को प्रेरित करे. जो उन्हें आत्म-निरीक्षण करने पर मजबूर करे कि क्या वे केवल कमाने के लिए सीख रहे हैं या आजीवन सीखने की तड़प बरकरार रखने के लिए ?

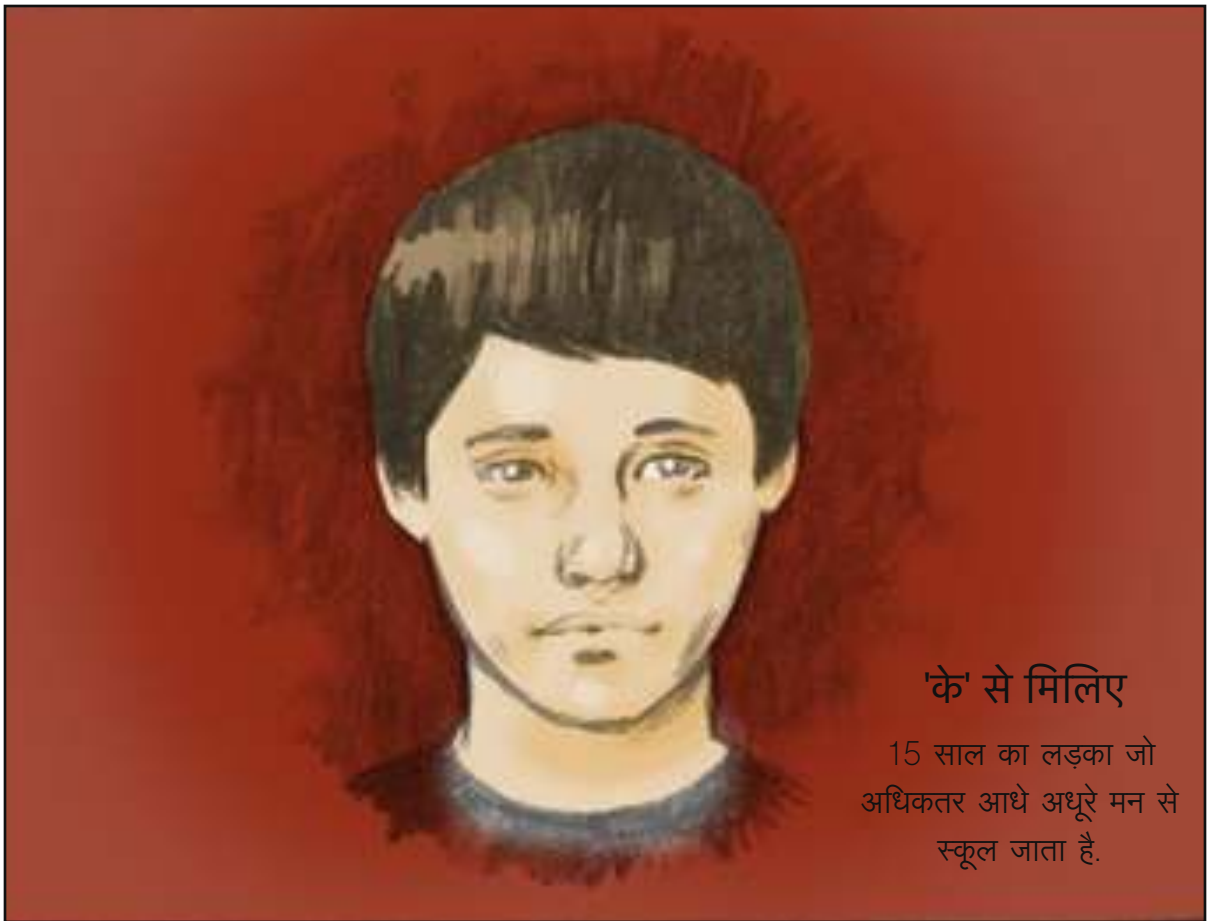
इसकी संभावना अधिक नज़र आती है कि आज के बच्चे अपने पूरे जीवनकाल में कई बार अपना पेशा बदलेंगे, जबकि औपचारिक शिक्षा हद से हद उन्हें अपने पहले पेशे के लिए तैयार करती है.

वे फले-फूलें, कुछ सार्थक कर सकें इसके लिए ज़रूरी है कि वे लगातार सीखते रहें और अपने आपको नए सिरों से तलाश करते रहें. यह तभी मुमकिन होगा जब वे अपने सीखने की दिशा खुद तय करने में सक्षम हों. उन्हें स्वनिर्देशित और स्वायत्त तरीके से सीखने की कला और उसके विज्ञान से भी परिचित होना होगा. अंदरूनी प्रेरणा, भावनात्मक लचीलापन, विलम्बित संतुष्टि, विकासशील मानसिक झुकाव, धुन, नाकामयाबी और मखौल उड़ाए जाने को झेलना – इन जैसे भावों व विचारों की बनावट, उनके विन्यास को लेकर आत्मसजग होना पड़ेगा.

इस कॉमिक बुक में हमारा हीरो है 15 साल का K. वह खुद से सीखने का हुनर तलाशता है. इसकी गहरी समझ बनाने के लिए शोध करता है. वह अपने में सीखने की तड़प पैदा करने के लिए हाथ-पैर मारता है. जिसमें उसे मज़ा आता है वैसे ऑनलाइन संसाधनों का वह ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल कर पाए, इसके लिए प्रयास करता है. उसका जुनून क्या है, आखिरकार उसे इसका अहसास हो जाता है. और फिर इससे उसे हौसला मिलता है कि वह धीरज और लगाव के साथ अपनी चाहत को पूरा करे.

इस किताब के पन्ने पलटनेवालों से भी यही हमारी उम्मीद है. और उनके लिए यही कामना भी ...

– अतुल पंत



'के' से मिलिए

15 साल का लड़का जो
अधिकतर आधे अधूरे मन से
स्कूल जाता है.



उसका अपना अड्डा है उसका कमरा. जहाँ वह
अपनी मनमर्जी का कर सकता है. घर के लोग (जो
पड़ोसी ज्यादा हैं) कभी कभार ही वहाँ आते हैं.

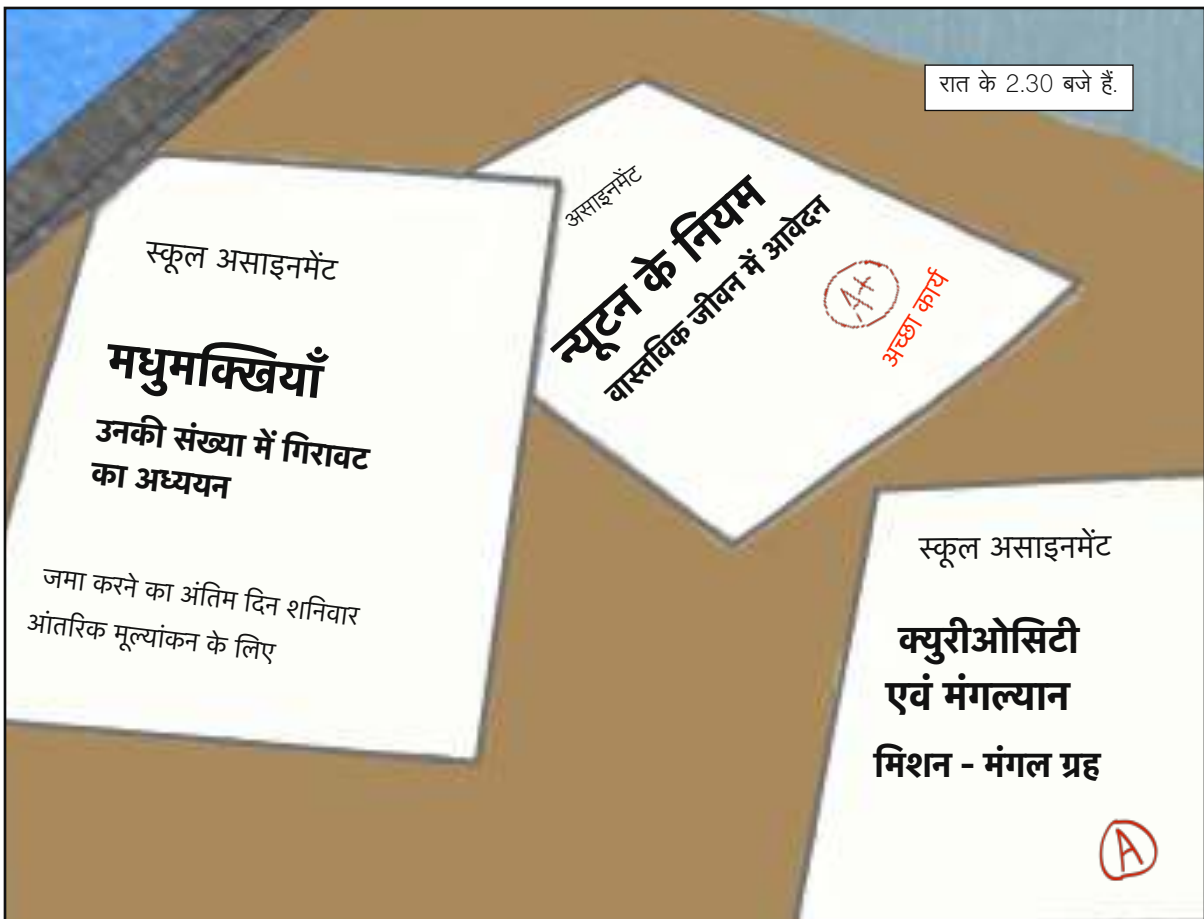
रात के 2 बजे हैं.

स्कूल असाइनमेंट
मधुमक्खियाँ
उनकी संख्या में गिरावट
का अध्ययन

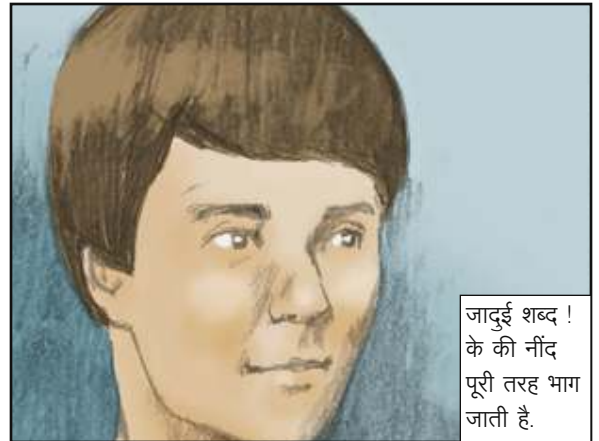
जमा करने का अंतिम दिन शनिवार
आंतरिक मूल्यांकन के लिए

स्कूल के ट्यूटोरियल के
काम में सफल होना ? कौन सा
बड़ा तीर मारना है ?

यह तो बड़ा आसान है.
अध्यापक जो पढ़ना चाहते हैं, बस उन्हें
वह थमा दो.







"रोज़मर्रा के अपने काम निपटाने के बाद हम सब बच्चे इकट्ठा हो जाते थे और तीर चलाने का घंटों-घंटों अभ्यास किया करते थे."



"सब कह रहे थे कि वह सबसे ज्यादा होनहार है और आनेवाले दिनों में उसकी वीरता की कहानियाँ लिखी जाएँगी. लेकिन मुझे ऐसा कुछ नहीं लगा. जब आपके गुरु साक्षात् द्रोणाचार्य हों तो भला आपसे बेहतर कौन हो सकता है ?"



"अर्जुन मुझे हर तरह से अहंकारी लगा — ऐसा बालक जिसको ऐशो आराम ने बिगाड़ रखा हो, जिसने आज तक खुद से कुछ हासिल न किया हो, जिसके सामने सबकुछ पका-पकाया बना-बनाया परोस दिया जाता हो..."



"उस रोज मुझे मालूम चल गया कि मुझे करना क्या है. मुझे हस्तिनापुर जाना था. मुझे गुरु द्रोण से मिलना था. मुझे उनको अपना गुरु बनाना था."











"मैंने सभी तीरंदाजों को पछाड़ कर तीरंदाजी में महारत हासिल कर ली."



एक, उस समय तुम क्या कह रहे थे ? गूगल मेरे लिए उसी मिट्टी की मूर्त की तरह है ?

क्या टेक्नोलॉजी मेरे लिए गुरु द्रोण है ?



मुझे मालूम नहीं कि यह हो सकता है या नहीं. क्या यह मुमकिन है ? क्या यह केवल साधन नहीं है ? मेरे हिसाब से यह किसी मंजिल को हासिल करने का एक ज़रिया भर है. साध्य का साधन भर !



तुम्हारे सपने को पूरा करने का एक साधन है. तुम्हारे जुनून को साकार करने का एक रास्ता है. के, सपने को पूरा करने का जज्बा तो तुम्हारे भीतर होना चाहिए. सच मानो, जहाँ से जज्बा फूटता है वहीं वह है !



तुम्हारे भीतर होने का क्या मतलब है ? मेरे भीतर क्या है भला ?



इसे कहते हैं प्रेरणा. प्रेरणा ही ज़िंदगी जीने का मकसद देती है, उसे मायने देती है. हर दिन हर सुबह तुमको जगने को मजबूर करती है.

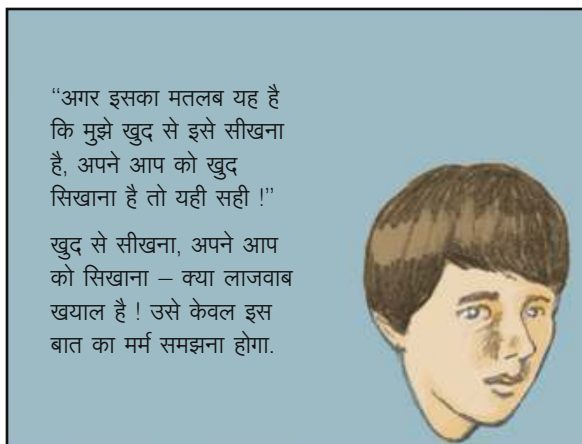
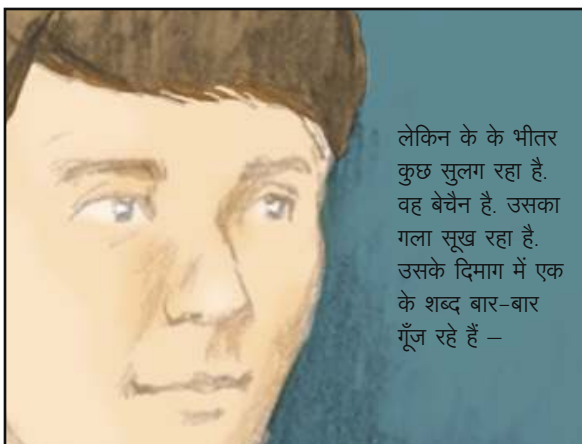


तुमको यह समझना पड़ेगा ... मैं पूरी दुनिया के इतिहास में सबसे अच्छे तीरंदाज के रूप में अपना नाम दर्ज कराना चाहता था — इसी ने मुझे जगाया, मुझे प्रेरित किया.



तीर चलाने की कला सीखने, उसका हुनर सीखने की तड़प ही मेरी प्रेरणा थी.

अगर इसका मतलब यह है कि मुझे खुद से इसे सीखना है, अपने आप को खुद सिखाना है तो यही सही !



3 महीने पहले की बात है...



बार-बार नकार दिए जाने की निराशा नई नहीं थी, लेकिन एकलव्य की बात ने आज उसकी पुरानी यादों को एक नया रूप दिया. कुछ महीने पहले के ने अपने कंप्यूटर के प्रोफेसर से क्लास के बाद मिलने का समय माँगा था...

उसने उन्हें बताया कि उसकी गेम डिज़ाइनर बनने की ज़बरदस्त इच्छा है. वह लगातार रात-रात भर जागकर मशहूर गेम डिज़ाइनर शिंजी मिकामी के इंटरव्यू पढ़ता रहता था, उनके वीडियो देखता रहता था.



वह उनके चरण चिह्नों पर चलना चाहता था. गेम की दुनिया में आजतक शिंजी मिकामी का मुकाबला कोई नहीं कर सकता था. उनका गेम 'रेसिडेंट इविल' – 'शैतानगाह का शैतान' सबसे मशहूर है और कड़ियों में चल रहा है.



इसे बाज़ार में आए दसियों साल बीत गए, लेकिन इसकी शोहरत कम नहीं हुई है. सच पूछिए तो मिकामी ने हॉरर गेमिंग यानी डरावने खेलों की दुनिया में क्रांति ला दी थी.



शिंजी मिकामी ने जो बनाया है वह सचमुच बड़ा दिलचस्प और रोमांचक है. उन्होंने बुझौल और पहेलियों से, जानलेवा वायरसों, प्रेतनुमा कुत्तों और विशालकाय मकड़ों से एकदम नई दुनिया गढ़ दी है. वास्तव में गेम का पूरा ढाँचा ऐसा है जो पैसेवालों और सरकार की सांठगांठ को, ताकतवर को चिढ़ाता है.



मिकामी जिन भयावह अनुभवों से गुजरे हैं वही उनके गेम में झलकता है. दरअसल हिरोशिमा पर परमाणु बम ने जो तबाही मचाई उसकी दास्तानें सुनते हुए मिकामी बड़े हुए थे.



वे यामागुची में पले-बढ़े थे जहाँ हिरोशिमा के कत्लेआम के शिकार हुए थे. हिरोशिमा पर बमबारी के दिन को याद करते हुए हर साल लाखों लाख कागज़ के फाख्ते उड़ाए जाते हैं – यही देख-देखकर मिकामी बड़े हुए थे.



के ने अपने प्रोफेसर को बतलाया था कि वह केवल गेम के पीछे पागल नहीं है और वह अपने आपको 'गेमर' भी नहीं मानता. गेमर को तो नशा होता है. यह सही है कि उसे गेम खेलना पसंद है, लेकिन असल चीज़ है गेम के डिज़ाइनर के दिमाग को पढ़ना, गेम बनानेवाले के गुर को समझना जो गेम को एक के बाद एक स्तर पर आगे लेजाता जाता है.



एक गेम डिजाइनर यह सब कैसे करता है, गेम खेलनेवालों का जुनून कैसे बढ़ाता चला जाता है, उनको कैसे उकसाता है – इसमें उसकी दिलचस्पी है, उसको मज़ा आता है। उसे यह मालूम था कि वह यह सब कर सकता है। यह उसके भीतर मौजूद है, लेकिन उसे उसकी कुंजी नहीं मिल रही है। उसे पता नहीं चल रहा कि वह यह करे कैसे !



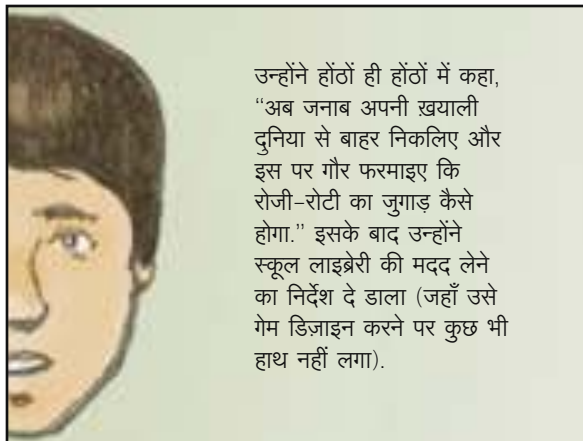
बहुत हताश था तो उसने अपने टीचर से पूछा



यह बात ज़बान पर लाने में ही उसे 20 मिनट लग गए थे। घर पर कई-कई बार अभ्यास कर लेने के बावजूद वह लड़खड़ा गया। उसकी ज़बान मानो चिपक गई। वह अटकता रहा। और प्रोफेसर को उसके खयालों को रौंदने में 45 सेकेंड भी न लगे। उन्होंने फौरन उसे खारिज कर दिया।



उन्होंने होंठों ही होंठों में कहा, "अब जनाब अपनी खयाली दुनिया से बाहर निकलिए और इस पर गौर फरमाइए कि रोजी-रोटी का जुगाड़ कैसे होगा।" इसके बाद उन्होंने स्कूल लाइब्रेरी की मदद लेने का निर्देश दे डाला (जहाँ उसे गेम डिजाइन करने पर कुछ भी हाथ नहीं लगा)।



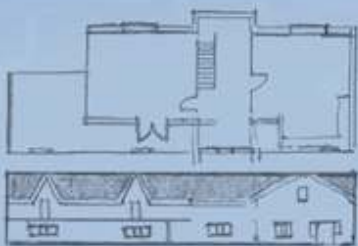
कुछ हफ्ते पहले पापा ने कहा था



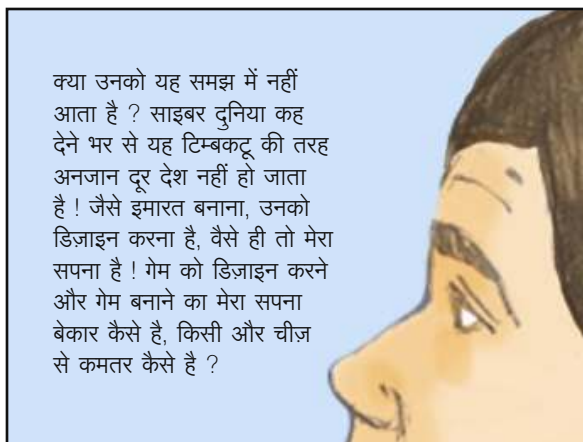
कंप्यूटर की हवाई दुनिया में घंटों-घंटों रहने के कारण ही यह फितूर तुम्हारे दिमाग में आया है।

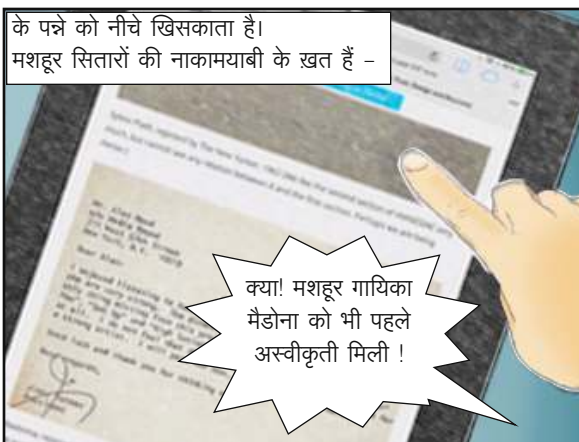


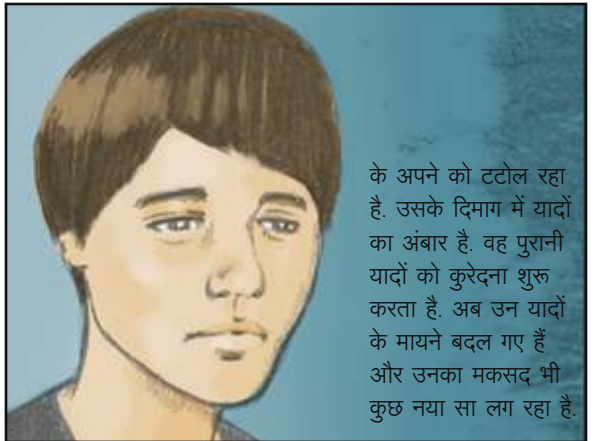
बड़े लोगों की दुनिया का यही हाल है ! कुछ फार्मूले वे निकाल लेते हैं जो कि के की समझ से एकदम परे हैं। जिसको वे 'हवाई दुनिया' कहते हैं वह हकीकत की दुनिया की तरह ही सच्ची है। कम से कम उसके लिए तो यह उतनी ही सच्ची दुनिया है।



क्या उनको यह समझ में नहीं आता है ? साइबर दुनिया कह देने भर से यह टिम्बकटू की तरह अनजान दूर देश नहीं हो जाता है ! जैसे इमारत बनाना, उनको डिजाइन करना है, वैसे ही तो मेरा सपना है ! गेम को डिजाइन करने और गेम बनाने का मेरा सपना बेकार कैसे है, किसी और चीज़ से कमतर कैसे है ?

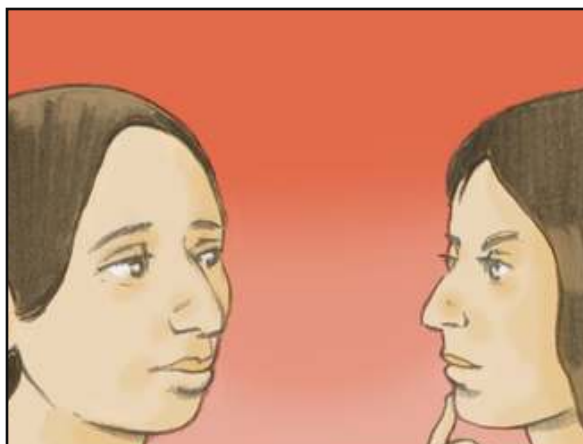




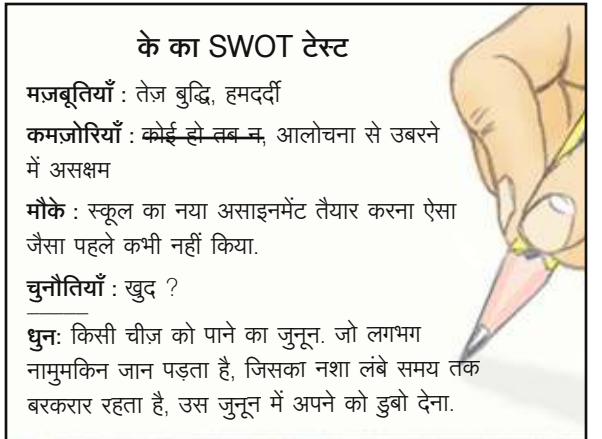




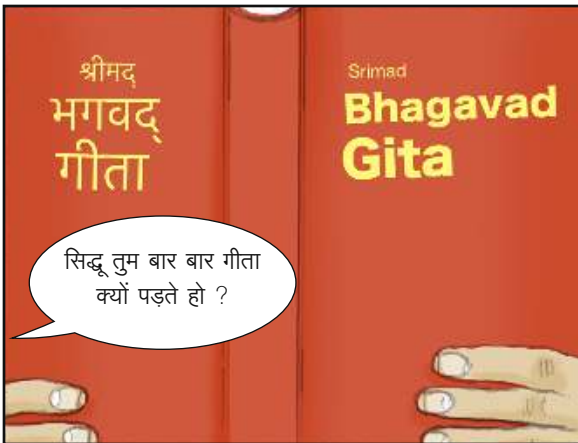




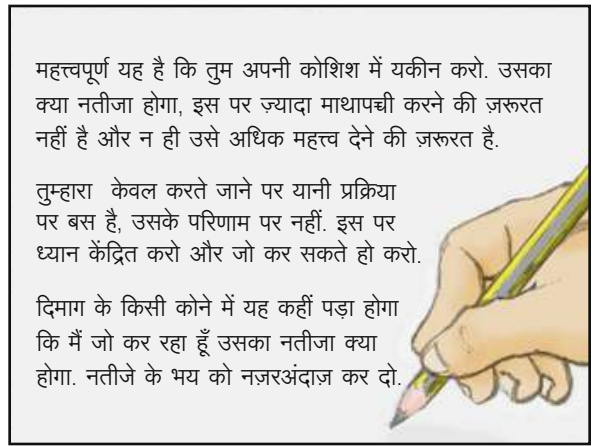


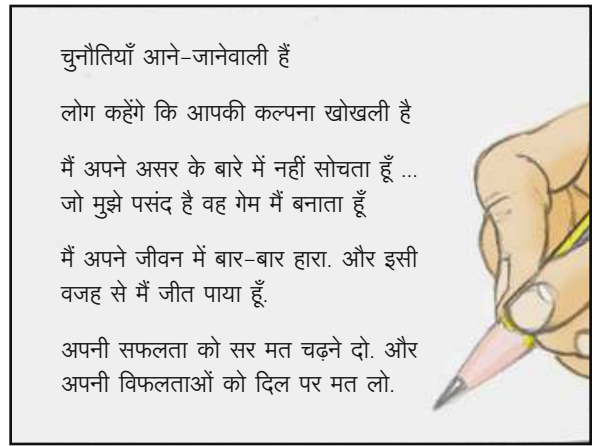




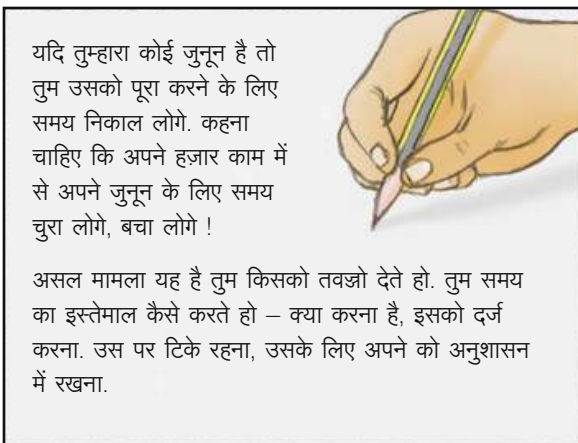












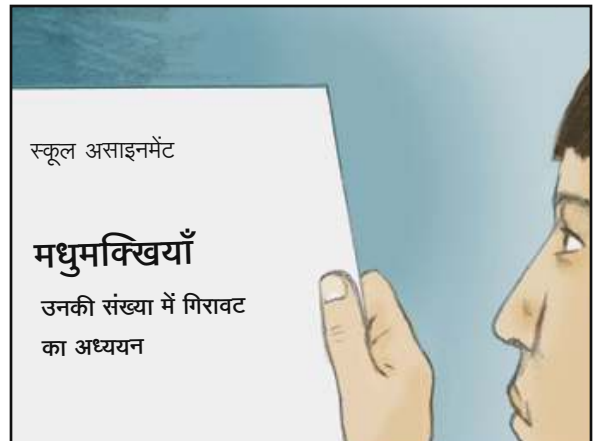












एक प्रेरित शिक्षार्थी होने के आवश्यक मानसिक गुण

K की संयोगवश एकलव्य से मुलाकात कारण बनी K के आत्मपरीक्षण की, इस चिंतन से K को समझ में आया कि केवल सीखने की खुशी के लिए सीखना जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण है, हम आशा करते हैं आप विचार करेंगे कि एक प्रेरित शिक्षार्थी के आवश्यक मानसिक गुण क्या होते हैं और इन गुणों को विकसित करेंगे.

आत्मसंयम और विलंबित संतुष्टि

प्रलोभनों पर काबू रख, लत्काल छोटे लाभ से वंचित रह, भविष्य के बड़े लाभ या लक्ष्य को पाने की क्षमता.

विकासशील मानसिक झुकाव

बुद्धि और प्रतिभा आनुवंशिक या पैदाइशी नहीं होतीं. कड़ी मेहनत और अभ्यास से इनको विकसित किया जा सकता है.



भावनात्मक लचीलापन

असफल होने पर हार मान कर टूटने के बनस्पत फिर से उठ खड़े होने की क्षमता.

दृढ़ इच्छाशक्ति

ध्यान लगाकर, एकाग्रचित्त होकर, भटकावों और भुलावों के सामने अडिग रहकर, लगभग नामुमकिन लक्ष्य को पूरा करने की धुन.

आंतरिक प्रेरणा

परीक्षा में अधिक अंक लाना या सजा के डर से पढ़ना बाह्य प्रेरणा हैं. सीखने की खुशी के लिए सीखना, स्वायत्तता, महारत और एक बड़े उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए सीखना आंतरिक प्रेरणा के स्रोत हैं.

सीखने की तड़प - मूल मंत्र

तुम्हारा सपना सच्चा है. बस अपने ढंग से उसकी शुरुआत कर डालो.

जो भी करना चाहते हो उसके लिए वक्त निकालो.

केवल काम करने पर ध्यान दो, उसके नतीजे पर नहीं. नतीजा तो केवल ऐसा एक खयाल है जो कर्म के दौरान दिमाग के कोने से झाँकता रहता है.

हर सुबह तुम्हें क्या चीज जगाती है ? यदि ईमानदारी से तुम इस सवाल का जवाब दे सकते हो तो फिर असली चीज है कि उसकी खोज में जुट जाओ. बस उसमें भिड़ जाओ !



आगे के अध्ययन के लिए

प्रेरित शिक्षार्थी के मानसिक गुणों पर वीडियो

(यह वीडियो अंग्रेजी में हैं। आप इस लिंक से ये सभी वीडियो देख सकते हैं - <http://bit.ly/1EWw0IW>)

- आंतरिक प्रेरणा (intrinsic motivation): <http://youtu.be/QZxh5ax-HoE>
- आत्मसंयम और विलंबित संतुष्टि (self-control and delayed gratification): <http://youtu.be/74O5SYcLqVg>
- धुन / दृढ़ इच्छाशक्ति (grit): <http://youtu.be/nCNsiPB5sJ8>
- ध्यान केंद्रित रखने की क्षमता (attention management): <http://youtu.be/7a2AVbW3AkA>
- आत्म प्रभावकारिता (self-efficacy): <http://youtu.be/IXyl8iDmRbU>
- विकासशील मानसिक झुकाव (growth mindset): <http://youtu.be/htXA-blbUU0>
- भावनात्मक लचीलापन (emotional resilience): <http://youtu.be/w8i3Gn0mEnE>
- जिज्ञासा (curiosity): <http://youtu.be/BKLf44bPMkw>
- Dan Pink - The Puzzle of Motivation: <http://youtu.be/rrkrvAUbU9Y>
- Walter Mischel on Marshmallow Study and Self-Control - <http://vimeo.com/109065003>
- Angela Lee Duckworth: The Key to Success? Grit - <http://youtu.be/H14bBuluwB8>
- Carol Dweck on Mindset - http://youtu.be/QGvR_0mNpWM
- Ellen Langer on Paying Attention - <http://youtu.be/cz94BmOIroA>
- Switch - a book on Behavioural Change: <http://youtu.be/qmmwWxVzSsw>

21 वीं सदी में परिवर्तन का प्रभाव

(यह वीडियो अंग्रेजी में हैं)

- Life Skills for Success and Well-being in the 21st century - <http://youtu.be/A1k-4pqAuXA>
- Humans Need Not Apply: www.youtube.com/watch?v=7Pq-S557XQU

हम आभारी हैं

निम्नलिखित लोगों के उदार योगदान से ही यह कॉमिक बुक संभव हो पायी है. इन लोगों ने हमारे क्राउड-फंडिंग अभियान में भरपूर योगदान दिया. हम इनके बहुत आभारी हैं.

अहाना	जाग्रवी उपाध्याय	परेश शाह	साँवली कौशिक
एल बियर्ड	लिज़ फससिना	राजीव जोशी	सरिता कोटेचा
डिंपल अग्रवाल	मनन	रिचर्ड केल्सी	शंकर शर्मा
दिव्या गुरुराज	मेपल कैपिटल	रवि शाह	शाइस्ता आशिक
एडवर्ड समूह लंदन	मार्क लेविन	रेहान हासिम	सुंदर नारायण
एला वाला	मिलन चौहान	सबिता गुप्ता	सन्नी नारंग
गौरव सेठी	नीति अवस्थी	साराह एवं एंड्रयू	सुशील राडिया
गौतम सिंह दिओ	निहार दास	सचिन गुप्ता	स्वाति एवं सुयश
हरीश कोटेचा	नीलिमा शाह	सचिन उत्तम	वंदिता पंत
जगदीश एवं कुसुम पंत	निशमा गोसरानी	संजय मालवीय	विक्रम सहाय

हमारा प्रयास

आज की दुनिया में शाश्वत कौशल, जैसे खुद से सीखना, गहरी एवं स्वतन्त्र सोच, बहु इन्द्रिय संचार, संवेदनशील सहकार्यता, उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की क्षमता... हमारी सामाजिक सफलता और दीर्घकालीन सुख के लिए अनिवार्य हो गये हैं. ऐसे जीवन कौशल में सभी छात्रों और युवाओं को निपुणता दिलाने कि दृष्टि से हम निम्नलिखित प्रयत्न कर रहे हैं -

- इस कॉमिक की 1000 छपी हुई प्रतियां हम 200 ऐसे स्कूलों में दे रहे हैं जहाँ सुविधाओं से वंचित बच्चे पढ़ते हैं.
- डिजिटल कॉमिक कोई भी मुफ्त या मनचाहे मूल्य पर दोक्लोअण्ड कर सकता है.
- हम कई स्कूलों में शाश्वत जीवनकौशल पर कार्यशाला चलाते हैं जिसमे हम सीखाने के नए नए ढंग प्रयोग करते हैं.
- हमारी वेबसाइट पर आप 21वीं सदी के लिए आवश्यक जीवन कौशल पर कई वीडियो देख सकते हैं.
- हमारी वेबसाइट पर हमने अब ऑनलाइन पाठ्यक्रम (courses) भी शुरू कर दिये हैं.

निरंतर जानकारी पाने के लिए आप हमारे साथ फेसबुक पर जुड़ सकते हैं

- www.facebook.com/lifeskills



टाइमलेस्स लाइफस्किल्स पर कुछ जानकारी

टाइमलेस्स लाइफस्किल्स एक लंदन स्थित सामाजिक कंपनी (social-enterprise) है और हम तीन प्रमुख मुद्दों को संबोधित करने का प्रयत्न कर रहे हैं - 21वीं सदी में उत्कर्ष के लिए आवश्यक जीवन कौशल का पाठ्यक्रम क्या हो, सीखने के ऐसे अनुभवों पर प्रयोग जो कि आज के विचलित शिक्षार्थियों (जिनका टेलीविज़न, मोबाइल फ़ोन, फेसबुक इत्यादि पर ध्यान बटा रहता है) के लिए मोहक साबित हों, और ये शिक्षा अनुभव सस्ते से सस्ते दामों पर सभी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराये जा सकें.

इसके लिए हम एक ऑनलाइन अकादमी का निर्माण कर रहे हैं जहां 21वीं सदी के लिए आवश्यक जीवन कौशल के नवीन शिक्षण समाधान, मुफ्त या सस्ते दामों पर उपलब्ध हैं. हमारी योजना है कि हम और नए कॉमिक, वीडियो, इंटरैक्टिव कहानियां, स्मार्ट फ़ोन एप्लीकेशन, ऑनलाइन खेल, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ऑनलाइन सेमिनार इस अकादमी पर उपलब्ध करें और यह अंग्रेजी एवं हिंदी, और हो सके तो अन्य भाषाओं में प्रस्तुत हों. सहयोग देने या अधिक जानकारी के लिए हमसे संपर्क करें -

**इस कॉमिक कि डिजिटल प्रति (ई-बुक) आप, मुफ्त या मनचाहे दाम पर, यहां
डाउनलोड कर सकते हैं: <http://gum.co/tadap>**

You can download the English version of this comic in digital form
(ebook), for free or at a price of your liking here:
<http://gum.co/yearningforlearning>